# समौसे डिस्काउंट पर

## ( लघु कथाएं )

जसेकला

# समौसे डिस्काउंट पर

## ( लघु कथाएं )

जसेकला

*लेखक* : **जसेकला**
*संपर्क* : jasekla@gmail.com



प्रथम संस्करण : मार्च 2013

*सहयोग राशि* : बीस रुपए

*टाइपिंग* : दर्शनलाल शर्मा

*शब्द-संयोजन* : साहिल शर्मा

*प्रूफ रीडिंग* : देव नारायण मौर्य

*आवरण* : निधि

*प्रकाशक* : **लोक सेवक संस्थान,**
बरवाला, मुजफ्फरनगर-251001 (उ०प्र०)
फोन : 09868173393

*वितरक* : **रोशनाई प्रकाशन**
212 CL/A, अशोक मित्र रोड
कांचरापाड़ा, नार्थ 24 परगना-743145 (प० बंगाल)
फोन : 033-25850249, 09330887131

---

*मुद्रक* : आर. के. प्रिंटिंग प्रैस, टांडा रोड, जालंधर

# अपनी बात

रोजमर्रा की ज़िंदगी में ऐसी बातें हैं जिन्हें हर किसी को सुनाने का मन करता है। वे हमें बहुत कुछ सिखाती हैं और सोचने पर मजबूर करती हैं। ऐसी ही कुछ ''छोटे मुंह की बड़ी बातों'' और ''बड़े मुंह की छोटी बातों'' को संजोया गया है इस संकलन में, जिसे मैंने समौसे खाते हुए चाय की दुकान पर शुरू किया था। इसलिए नाम रखा है-

*समौसे डिस्काउंट पर*

# समर्पित

मेरे प्यारे

फुफ्फड़ जी और नाना जी

को

जो मुझे

बचपन में

कहानियां सुनाते थे

और

अब इस दुनिया में नहीं हैं

# अनुक्रम

# भगवान देख रहा है

नववर्ष के अवसर पर एक ठेकेदार ने ऑफिस के उन सभी कर्मचारियों को, जिनसे उसका काम पड़ता था, भगवान की आरती और फोटो वाला कैलेंडर भेंट किया। अफसर को गोल्डन डायरी भी मिली जो उसने अपने नर्सरी क्लास के बच्चे को दे दी। कैलेंडर को उसने ऑफिस के चैंबर में टंगवा दिया। फाइल को पढ़ते हुए नजर दीवार पर चली जाती थी और उस ठेकेदार की कंपनी का नाम सदा ध्यान में बना रहता था।

# विद्यालय और कार्यालय

मां ने सुबह जल्दी उठकर बच्चों को तैयार किया और उन्हें स्कूल भेजकर खुद लेट गई। वह सरकारी ऑफिस में काम करती थी जहां सब लेट-लतीफ आते थे और वहां कोई हाजिरी नहीं होती थी। स्कूल में देर से पहुंचने पर गेट बंद हो जाता था।

# संग का असर

मेरे बड़े भैया पढ़ने में बहुज तेज थे। मेरी मां उनके कई-कई दिनों तक न नहाने की आदत से परेशान थी। भैया की क्लास में पढ़ने वाले एक लड़के को उसके माता-पिता ने इस उम्मीद के साथ मेरे घर पर भेजना शुरू किया कि वह भी पढ़ाई में कुछ बेहतर करेगा। पर हुआ कुछ उल्टा ही। वह लड़का भी न नहाने की आदत सीख गया।

# बड़ा मुंह छोटी बात

घर में बर्तन-चौका करने वाली बाई आई।

छोटा बच्चा दौड़कर आया और उनसे बाई के पैर छुए-''आंटी जी, प्रणाम।''

मां उस वक्त तो कुछ न बोली। बाद में उसने बच्चे को खूब डांटा और चपत भी लगाई।

रोता हुआ बच्चा मासूमियत से बोला-''आपने ही तो कहा था। बड़ों के पैर छूते हैं।''

मां गुस्से में बोली-''चुप, तुझे बहुत पता है कौन बड़े होते हैं! आगे से ऐसा किया तो मार-मारकर तेरा भुरता बना दूंगी।''

# मिडिल और सरनेम का चक्कर

मैं बच्चों को 26 जनवरी के मौके पर पारंपरिक खेल खिला रहा था। उनसे परिचय करने और व्यवस्था कायम करने के लिए कागज पर उनके नाम नोट करते हुए जब मैंने एक बच्चे से उसका नाम पूछा तो वह बोला–''अर्पित सिंह।'' मैंने उसे देखा और मजाक में कहा–''तुम्हारे सींग (सरदारों के सिर का जूड़ा) तो है नहीं।''

तपाक से पास खड़ा नन्हा बच्चा बोला-''तो अंकल, उसका नाम अर्पित लिख दो।''

मैंने बाद में सोचा–*सरनेम तो सींग से भी परे की* चीज है।

# प्यास

गर्मी के दिन थे। मैं और अजय दिल्ली के कनाट प्लेस में स्थित बालसहयोग नामक स्वयंसेवी संस्था में गये। वहां एक छोटी बच्ची हैंडपंप से मटके में पानी भर रही थी। उसने पूछा–''क्या लेने आये हो ?''

अजय ने कहा–''पानी पीना है बिटिया..........तुम्हारा नाम क्या है ?''

वह बच्ची मासूमियत से बोली–''गंगा।''

और मैं नल के नीचे हाथों की ओक लगाकर झुक गया।

# मात्रा का फर्क

मैंने इक बच्चे से पूछा–''गलती में पूरा ल आता है या आधा''

उसने बड़ी सहजता में जवाब दिया

''बड़ी गलती करो तो पूरा और छोटी गल्ती करो तो आधा।''

# पढ़ाई और कमाई

वह एमबीबीएस कर चुका था और पिछले साल पीजी में उसका सलेक्शन भी हो गया था। इस बार वह दोबारा पीजी की प्रवेश परीक्षा दे रहा था। मेरे पूछने पर उसने बताया कि उसे पीडियाट्रिक्स में ही पीजी करनी है। जब मैंने पूछा कि लगता है कि आप बच्चों से बहुत प्यार करते हो तो उसका जवाब था- ''नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। बच्चों की खातिर मां-बाप कुछ भी खर्च कर सकते हैं। काम जम जाए तो बच्चों का डाक्टर खूब कमाई कर सकता है।''

# परहेज

मेरे चाचा को मधुमेह की बीमारी थी। उन्होंने कहा-''मैं डाक्टर के पास दीपावली के बाद जाऊंगा ताकि त्यौहार की मिठाइयों का पूरा आनंद ले सकूं।'' डॉक्टर ने शुगर कन्ट्रोल करने के लिए उन्हें दवाई दी। एक शाम हम सब नाश्ते पर बैठे थे। सामने गरमा-गरम जलेबियां रखीं थीं। चाचा जी को मैंने कहा-'आप तो जलेबी नहीं खायेंगे ?' वे तपाक से बोले-'''क्यों नहीं खाऊंगा, ज़रूर खाऊंगा। शुगर की गोली इसलिए ही तो लेते हैं ताकि मिठाई जी-भर कर खा सकें।''

# हैल्थ-केयर

काउंटर पर एक बूढ़ा-गरीब आदमी लाठी के सहारे खड़ा था। उसने दस रुपये का एक मुथड़ा-सा नोट अपनी जेब से निकाला और बोला-''बेटी, मेरी भी पर्ची बना दो, मुझे आंखें दिखानी है।'' काउंटर पर बैठी लड़की दीवार की तरफ इशारा करती हुई झिड़ककर बोली-''दिखाई नहीं देता डेढ़-सौ रुपये है फीस।'' बूढ़ा सहम गया, वह क्या देखता और क्या पढ़ता! हां, मैंने उस नोटिस-बोर्ड को जरूर ध्यान से देखा-''कंसलटेंसी-150 रुपये, रिविजिट-100 रुपये, इमरजेंसी-200 रुपये और आउट ऑफ टर्न-300 रुपये।'' थोड़ी देर बाद बूढ़ा कुछ सोचकर बोला-''मैं सीनियर सिटीजन हूं और मेरे पास गरीबी वाला बीपीएल कार्ड भी है।''

इसी बीच डाक्टर साहब बाहर निकल आये और झल्लाकर बोले-''क्या शोर मचा रखा है ? यह मेरा निजी क्लीनिक है। यहां सरकार के नियम नहीं चलते। फीस के पैसे हैं तो आओ, वरना भाड़ मैं जाओ।'' और वह बूढ़ा लाठी हाथ में लिए, खुद को झोंकने, भाड़ की तलाश में चल पड़ा जो अब शहर से गायब हो चुके थे।

# पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप

इतवार का दिन था। मैं अपने घर के लॉन में टहल रहा था। दो बच्चे मेरे पास एक कागज लेकर आये। किसी एनजीओ के प्रोजेक्ट का फार्म उनके सरकारी स्कूल ने उन्हें दिया था। फार्म में चंदे की कुल राशि के हिसाब से बच्चे को बैज और सर्टीफिकेट देने का भी जिक्र था।

मैंने सोचा अच्छा है-बच्चों को चंदा इकठ्ठा करने की प्रैक्टीकल ट्रेनिंग दी जा रही हैं।

बच्चों के माता-पिता इसे ही समाज-सेवा समझ रहे हैं !

हां ! यह अलग बात थी कि वो दो बच्चे भी अमीर घरों के नहीं थे।

# अर्थशास्त्र

किताब की दुकान पर खड़े एक आदमी ने बजट में घोषित नये टैक्स नियम की नई किताब के बारे में पूछा तो दुकानदार बोला 400 रुपये की है। जब उसने कीमत देकर रसीद मांगी तो दुकानदार ने कहा बिल लेने पर साढ़े 12 परसैन्ट वैट एक्सट्रा लगेगा। वह आदमी थोड़ा झिझका फिर कुछ सोचकर बोला- ''चलो रहने दो बिल की क्या जरूरत ; वैट की पर्ची से इकनोमिक्स क्या खाक समझ आयेगी!''

खरीददार और दुकानदार दोनों अपनी चालाकी से खुश थे। सरकार को चूना लगे उनकी बला से।

## फैमिली बिजनेस

दो सगे भाईयों ने मिलकर होटल का काम शुरू किया। नाम रखा-भाईयों का ढाबा। कुछ साल बाद खर्च-आमदनी को लेकर उनमें अनबन हो गई। अब दो ढाबे बन गये जिनके नाम थे-*बड़े भाई* का ढाबा और *छोटे भाई* का ढाबा। वक्त गुजरा तो सड़क पर कई नोटिस बोर्ड टंग गये-''असली भाई का ढाबा इधर है, ऑरिजिनल ढाबा यह है, नक्कालों से सावधान आदि।'' लोग दोनों ढाबों पर खाना खाते हैं पर वो दोनों सगे भाई कभी साथ खाना नहीं खाते।

## हम दो : हमारे दो

दो बच्चे थे-एक भाई और एक बहन। उनको लड़ते देखकर मम्मी-पापा ने डांटा : ''तुम दोनों अब बड़े हो रहे हो, छोटी-छोटी बातों पर ऐसे लड़ा मत करो ! ''

वे नन्हें बच्चे बड़ी मासूमियत से बोले-''सेम टू यू ।''

फैमिली प्लानिंग का त्रिकोणीय विज्ञापन मेरी आंखों के सामने तैर रहा था-*छोटा परिवार : सुखी परिवार*।

# उम्र का हिसाब

आज उसका जन्म दिन था। उसने लम्बा तिलक लगाया हुआ था। मैंने माया से पूछा–''कितने साल की हो गई तुम आज ?'' वह बोली–''तुम तो 49 के हो न, तुम मुझसे तीन साल बड़े हो। वैसे औरतों की उम्र नहीं पूछते।''

उसी शाम मैं माया के साथ ट्रेन से आगरा जा रहा था। रास्ते में टीटीई आये और टिकट देखकर बोले–''यह तो सीनियर सिटीजन का टिकट है, मैडम प्लीज जरा आईडी दिखा दीजिये।''

वह बोली–''आईडी तो नहीं है, वैसे मैं 64 साल की हूं।''

टीटीई बोला–''आप लगती तो नहीं हैं।''

वह लचकती हुई मुस्कराहट से बोली–''वो बाल थोड़ा डाई करती हूं न ! वैसे औरतों से उनकी उम्र नहीं पूछते।''

मैंने मन ही मन कहा–''सब प्रभु की माया है।''

टीटीई भी मंद मंद मुस्कराते हुए आगे चला गया।

# कर्म-योग

रात के नौ बजे थे। मुझे जालंधर स्टेशन से दिल्ली के लिए गोल्डन टेम्पल ट्रेन पकड़नी थी। चूंकि अभी काफी वक्त था, मैं स्टेशन से बाहर निकल आया और चौक की तरफ पैदल चलने लगा। बगल से एक बूढ़े सरदार जी (जो सत्तर से ऊपर के लगते थे) रिक्शा चलाते हुए जा रहे थे। मैंने उन्हें रोका और दाम पूछकर रिक्शे मैं बैठ गया। मैंने उनसे जब पूछा-उम्र, गांव-------तो उन्हें लगा कि मैं कहीं उनको लाचार समझ रहा हूँ और वे बोले-''मैं बैंक में काम करता हूँ, रिक्शा मेरा है, सुबह-शाम इसे लेकर ऑफिस जाता हूँ, साथ में सवारी बैठा लेता हूँ। एक्सरसाइज भी हो जाती है और 20 रुपये की कमाई भी।''

यूँ तो हम टीवी वाले बाबाओं से प्राणायाम, योग और आसन की खूब बातें सुनते हैं और मोटापा कम करने के लिए एक ही जगह उछल-कूद करते हैं (या फिर लेटकर साइकिल चलाते हैं) किंतु उस शाम बूढ़े बाबा ने रोचक फलसफा बताया। इससे बढ़िया व्यायाम और शरीर-श्रम क्या होगा ? मालिक बने हुए रिक्शा चलाना और खुश रहना।

# आश्रम

आश्रम मे महंत जी अकेले रहते थे। वहां गृहस्थ लोगों का प्रवेश वर्जित था। एक दिन कोई भटका हुआ व्यक्ति उनके पास आश्रय के लिए आया। वह आश्रम में रहने लगा। कुछ दिन बाद उसने महंत जी से अनुरोध किया कि वह अपनी पत्नी को भी आश्रम में लाना चाहता है जिससे उसके मन का भटकाव शांत हो सके और वह ठीक से साधना कर सके। संकोच और विरोध के बावजूद महंत जी राजी हो गए। पति-पत्नी आश्रम में रहने लगे। पत्नी रसोई संभालने लगी। कुछ अरसा और गुजरा। उस दम्पति ने अपने दो बच्चों को भी आश्रम में लाने की पेशकश की। महंत जी थोड़ा हिचके फिर कुछ सोचकर उन्होंने इसकी भी इजाजत दे दी। अब उस व्यक्ति का पूरा परिवार आश्रम में था। और एक दिन महंत जी को उस व्यक्ति ने धक्के देकर आश्रम से बाहर निकाल दिया यह कहते हुए कि-''यह आश्रम नहीं है, मेरा घर है। यहां अकेले लोगों का रहना वर्जित है।''

# मेवा लाओ-सेवा पाओ

दीपावली पर उसके घर ड्राई फ्रूटस के ढेरों पैकेट उसकी कुर्सी के संबंधियों द्वारा गिफ्ट के तौर पर आते थे। जब मैंने पूछा कि इतने सारे डब्बों की मेवा का वह क्या करता है तो उसने जवाब दिया-''हम इन मेवाओं का चूरा करके लड्डू और पिन्नियां बनवा लेते हैं जिन्हें परिवार के सब लोग रोज सुबह नाश्ते में खाते हैं।''

मैंने सोचा सही ही तो है सरकारी सेवा को दक्षता से करने के लिए और दिमाग दुरूस्त रखने के लिए अगली दीपावली तक का इंतजाम तो हो जाता है।

# ईमानदार लकड़हारा

एक लकड़हारा था। उसने जान-बूझ कर अपनी कुल्हाड़ी नदी में गिरा दी। वह देवदूत का इंतजार करने लगा। थोड़ी देर बाद देवदूत सोने की कुल्हाड़ी लेकर प्रकट हो गए। उस लकड़हारे ने सोने की कुल्हाड़ी को लेने से मना कर दिया। फिर देवदूत ने नदी में डुबकी लगाई और चांदी की कुल्हाड़ी लेकर आए। लकड़हारे ने उसे भी लेने से मना कर दिया।

अंत में जब देवदूत लोहे की कुल्हाड़ी लेकर नदी से बाहर निकले तो वह लकड़हारा बोला-"हां यह मेरी है।" देवदूत ने वह लोहे की कुल्हाड़ी लकड़हारे को दे दी और खुद अंतरध्यान हो गए। वह लकड़हारा आज भी देवदूत के वापिस आने का इंतजार कर रहा है।

# रोजा और रोजी

वह नारियल के टुकड़ों की थाली कंधे पर उठाए चला जा रहा था। ट्रैफिक लाइट पर खड़ी बसों में चढ़कर या वहां खड़ी गाड़ियों के इर्द-गिर्द ही वह उन्हें बेचता है। मेरी भावी ने एक दिन बताया था कि ये नारियल मंदिरों से सप्लाई होते हैं। उन पर जो प्रसाद का चढ़ावा भक्त लोग अर्पित करते हैं, वही रि-साईकिल होकर बाजारों में इन छोटे-छोटे बच्चों के कंधों पर आ जाता है। मैंने उससे पूछा-''कितना लाते हो और कहां से।'' वह बोला-''तीन चार किलो, अन्ना-नगर से''। अन्ना का मंदिर ही उसकी अन्नदाता है। पुजारी और भगवान तो इतना चढ़ावा खाने से रहे, तो मोहसिन की रोजी निकल जाए : यही पुण्य-प्रसाद है। उसने बताया कि रोज करीबन सौ रुपये तक का इंतजाम हो जाता है किंतु ''आजकल रोजे चल रहे हैं'' इसलिए धंधा मंदा है। मैंने सोचा रोजे का महत्व दीन पर यकीन करने वालों के लिए है, मोहसिन जैसे दीन की तो रोजी ही सच्चा रोजा है। वह न रोये और राजी रहे : यही सही सहरी है और यही इफ्तार है रफ्तार की जिंदगी में।

# समौसे डिस्काउंट पर

इक शाम मैं मिठाई की दुकान पर नाश्ता करने गया। भूख जोरों से लगी थी इसलिए कुछ सॉलिड खाने के इरादे से जब समौसे लाने को कहा तो दुकानदार बोला-''साहब समौसे तो नहीं है''। मैंने दुकान में घुसते वक्त बाहर ट्रे में समौसे देखे थे सो बोला-''अरे ! पड़े तो थे अभी, खत्म हो गए क्या ?''

''नहीं साहब ! वो आपके मतलब के नहीं हैं'' उसने कहा।

''मतलब ?'' मैंने आश्चर्य व्यक्त किया।

मेरे दुबारा पूछने पर उसने बताया कि वे समौसे सुबह के बने हुए थे और बासी हो गए थे।

मैंने पूछा ''तो अब इनका क्या करागे ?''

उसने सहजता से जवाब दिया-''बिक जाएंगे। रात को रिक्शे वाले आते हैं न ठर्रा पीकर। उन्हें आधे दाम में बेच देते हैं हम ये सब।''

मैं दुकानदार की बात और दुकानदारी के गणित का मतलब समझ गया।

# साफ सुथरे लोग

गाड़ी का इंतजार करते हुए एक पढ़ा-लिखा नवयुवक मूंगफली चबा रहा था और छिलके फर्श पर गिराता जा रहा था। पास ही डस्टबिन लगी हुई थी। सफाईवाले ने उसे टोका-''मैं अभी यहां साफ करके गया हूँ। आप छिलके तो डस्टबिन में फेंक सकते हो।'' युवक ने गुस्से से उसको देख और झिड़क कर बोला- ''चुपचाप अपना काम कर।'' सफाईवाले ने छिलके उठाकर डस्टबिन में डाल दिए। उस युवक की अकड़ और बढ़ गई। थोड़ी देर बाद वही सफाईवाला वहां से फिर गुजरा। युवक मूंगफली के छिलके अभी भी फेंके जा रहा था। सफाईवाले ने चुपचाप छिलके उठाए और उस नवयुवक की जेब में ठूंस दिए। शान से अपनी लंबी झाड़ू को कंधे पर रखकर वह दूसरे प्लेटफार्म की सफाई करने चला गया।

# धर्मार्थ और पुरूषार्थ

सिखों के गुरूद्वारों में फर्श धुलाई और जूते-चप्पलों के रखरखाव की सेवा करने का फैशन है। दिल्ली के बंगला साहिब गुरूद्वारे में जेवरों से लदी हुई अमीर घरों की मोटी औरतों से कहने का मन होता है-''माता जी ! यदि यह सेवा तुम घर में ही कर लो या झाड़ू-पोंछा करने वाली बाई के शरीर-श्रम की इज्जत करो तो तुम्हें गुरूद्वारे आने की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

# धर्म की आजादी

दिसम्बर का महीना था। बच्चों के इम्तहान चल रहे थे। वे देर रात तक पढ़ाई करते और सुबह तीन बजते ही गुरूद्वारे से लाउडस्पीकर पर आ रही कर्णभेदी आवाज सुनकर उनकी कच्ची नींद खुल जाती। मुहल्ले के सारे लोग परेशान थे। एक सुबह कुछ लोग इकठ्ठे होकर साढ़े तीन बजे गुरूद्वारे पहुंचे तो उन्होंने देखा कि पाठी जी आराम से अपने कमरे में सो रहे हैं। उधर से खर्राटों की आवाजें आ रहीं थीं और इधर सीडी पर प्रार्थना बज रही थी।

# मुलाकात

इंजीनियरिंग कालिज के मेरे एक सहपाठी अक्सर फोन पर कहते थे कि कभी घर आया करो बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई। मैं ट्रेन से वापसी दिल्ली आ रहा था और उनके शहर से गुजर रहा था। अचानक कुछ सोचकर मैं ट्रेन से उतर गया और सीधे उनके घर पहुंच गया। दरवाजे की घंटी न दबाकर मैंने उन्हें सरप्राइज देने के लिए फोन किया तो वे उसी लहजे में बोले- ''फोन पर ही बतियाते रहोगे, कभी मिलने भी आ जाओ। दो-तीन दिन रहो, खूब गपशप होगी। कॉलिज और हॉस्टल की पुरानी बातें बहुत याद आती है।'' मैंने जैसे ही कहा-अरे यार दरवाजा तो खोलो, मैं तुम्हारे घर पर ही खड़ा हूँ-तो उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। जैसे-तैसे दरवाजा खुला; मैं थोड़ी देर बैठा, चाय-नाश्ता किया। वे बोले-''हमें आज बाजार जाना है। कभी बाद में मिलेंगे।''

# तू ही सहारा, तेरा ही आसरा

शहर को सुंदर बनाने के लिए झुग्गियां हटाई जा रहीं थीं। उसने अपनी झुग्गी के पास एक पत्थर रख दिया और उस पर थोड़ा सिंदूर लगाया। फिर थोड़ी मिट्टी खोदकर तुलसी के पौधे लगाए। ऊपर बोर्ड लगाया- *जय श्री राम*। एक घेरा खींचा। अब वह मुस्कराया। इस लक्ष्मण-रेखा में कोई सरकारी रावण नहीं घुस सकता था। भगवान ने भक्त को सुरक्षा प्रदान की।

# भक्ति में शक्ति

घर में पूजा चल रही थी। हम सब तालियां बजाकर ऊंची आवाज में आरती कर रहे थे। वह अभी सिर्फ डेढ़ साल का था। शंख और घंटे का शोर सुनकर पहले तो वह थोड़ा डरा। कुछ देर बाद वह जोर से हंसने लगा। शायद वह पूजा के इस क्रियाकर्म को पागलपन या कोई खेल समझ रहा हो। फिर न जाने क्या सोचकर वह नन्हां बालक हमारी नकल करने लगा।

अब वह बच्चा भी तालियां बजाते हुए नाच रहा था और भगवान की पूजा में शामिल हो गया था।

# पहचान

वे ऑफिस में अपने विभाग की सबसे बड़ी पोस्ट पर पहुंच चुके थे।

उनसे किसी ने पूछा-"आप कौन हैं ?"

उन्होंने अपना नाम नहीं बताया और रौब से बोले-"चीफ इंजीनियर।"

सवालिए ने कहा-"दो महीने बाद जब रिटायर हो जाओगे तब...... !"

वो चुप थे मगर पीछे से उनके चमचे की आवाज आई-"एक्स चीफ इंजीनियर !"

और उनके चेहरे पर रौनक आ गई। साहब की अकड़ थोड़ी और बढ़ गई।

# फर्ज और कर्ज

वे स्कूल की मास्टरी से रिटायर्ड हो चुके हैं और कुछ साल पहले उनकी पत्नी गुजर गई थीं। उनकी एक ही बेटी थी जिसकी शादी हो चुकी थी और अब वे घर में अकेले ही रहते हैं। मैं उनसे मिलने उनके घर गया था और उनके किस्से-तजुर्बे सुन रहा था। इतने में अचानक एक बच्ची आई और आते ही वह रसोई में चली गई। थोड़ी देर में वे भी अंदर गये और चाय लेकर आ गए।

मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि उस बच्ची का नाम संजू था और चाय उसी ने बनाई थी। बातचीत में पता चला कि वह बच्ची उन्हीं के पास रहती है, उसके मां-बाप उन्हीं के मोहल्ले में रहते हैं और उस बच्ची की दादी उनका खाना बना जाती है। मैं मास्साब के बालप्रेम से प्रभावित था। थोड़ी देर बाद लंबी सांस लेते हुए वे बोले-''मैं ही इसे पढ़ाता हूं। किसी जमाने का कोई कर्ज है इस बच्ची का।'' इससे पहले कि मैं कुछ कहता या सोच पाता, अचानक वे बच्चे पर झल्लाकर बोले-''बेवकूफ हो, तमीज नहीं है ! बिस्कुट क्यूं उठा लाई...।'' बच्ची सहम गयी और झेंपकर नल के नीचे बर्तन रखकर उन्हें मांजने के काम में जुट गई। मैंने मन ही मन सोचा-बचपन को छीनकर हम कैसा फर्ज निभा रहे हैं और आखिर कर्ज किसका किस पर है-बच्चे का मास्टर पर या मास्टर का बच्चे पर। पिछला जन्म किसी ने नहीं देखा। हां अगले जन्म में सबको कर्ज जरूर चुकाना होगा।

# मीडिया कवरेज

मैं गदर आंदोलन के शहीदों की याद में लगने वाले सालाना मेले को देखने जालंधर गया था। अचानक किसी ने मुझे टोका- ''आप थोड़ा यहीं रूकना, मैं दो बुजर्ग ढूंढकर अभी लाता हूं।''

मैं नजदीक के बुकस्टॉल पर खड़ा होकर किताबें देखने लगा। खरीदी हुई किताब मेरे हाथ में ही थी। वो दो बूढ़े सरदारों के साथ बातें करते हुए मेरी तरफ ही आ रहा था-''बढ़िया फोटो आएगा...देखो....उनके पास झोला भी है और किताब भी।''

मैं कुछ रियेक्ट कर पाता उससे पहले ही उसने मुस्तैदी से मुझे उन दो बुजुर्गों के बीच खड़ा कर दिया और हमें निर्देश दिया-''आप तीनों कैमरे की तरफ चलते हुए आओ....किताब खोलकर...बातें करते हुए।'' उसने कैमरे का एंगल सेट किया और क्लिक का बटन दबा दिया।

कौन सी बातें हमने की, कौन सी किताब थी, हम कौन थे- उस प्रोफेशनल फोटोग्राफर को इन बातों से कोई मतलब नहीं था। चलते-चलते बस उसने हमें हिदायत दी-''और किसी से फोटो मत खिंचवाना।''

अगली सुबह मशहूर अखबार के नगरीय पृष्ठ पर हमारी फोटो छपी थी।

# जब जागो तभी सवेरा

बूढ़ी गोपी अम्मा के पास एक मुर्गा था। उसे वह बड़े प्यार से रखती थी। नाम था उसका सूरज क्योंकि वह जब बांग देता था, उसके कुछ देर बाद ही पूरब से सूरज उगता था। एक दिन गांव वालों से अम्मा की लड़ाई हो गई। वो नाराज होकर शहर की बस में बैठ गई और बोली-''ले जा रही हूँ मैं अपना सूरज, अब देखना कल से इस गांव में सुबह न होगी।'' मुर्गा भी कलगी ऊपर किये अकड़कर बैठा था।

और बस के जाते ही गांव वाले ठहाके लगा रहे थे-''दुनिया कभी रुकी है किसी के लिए। चलो अपना काम करते हैं।''

# वह शख्स परेशान सा क्यूं है

गर्मी का मौसम था तो उसने शिकायत की-''गर्मी बहुत है पसीना आता है। कुछ करने को मन नहीं करता।'' मौसम बदला, बरसात होने लगी तो उसने शिकायत की-''घर से निकलना मुश्किल हो गया है। रास्ते में कीचड़ है और बाहर निकलते ही भीग जाता हूं।''

मौसम फिर बदला, सर्दी शुरू हो गई। उसने शिकायत की-''ठंड बहुत है। ठिठुरन के कारण हाथ पैर ठीक से नहीं चल पाते।''

अब मौसम के चक्र में बसंत का सुहावना मौसम था-न ज्यादा ठंड, न ज्यादा गर्मी और न ही बरसात। फिर भी वह खुश ाहीं था, बोला-''मुझे डर है कि यह मौसम ज्यादा दिन ठहरेगा हीं।''

# प्रार्थना

प्रभु से प्रार्थना करती हुई मां बहुत परेशान थी

''शादी क्यूं नहीं होती मेरे बेटे की ?''

बेटे की शादी हो गई और बहू घर आ गई।

दो साल बाद मां प्रभु से कह रही थी-''शादी क्यूं हो गई मेरे बेटे की !''

# जीवन-दर्शन

मैंने अपने एक मित्र से जब उनकी गृहस्थी का हाल-चाल पूछा तो वो बोले :

''सब बढ़िया चल रहा है। हम दोनों के बीच समझौता है। बड़ी समस्याओं के बारे में फैसला मैं लेता हूँ और छोटी समस्याएं श्रीमती जी संभालती हैं।''

'बड़ी-छोटी !' मैंने कहा

''बड़ी मसलन अमेरिका को चीन पर हमला करना चाहिए या नहीं, भारत को परमाणु शस्त्र बनाने चाहिए या नहीं, रेल मंत्री किसे बनाना चाहिए।''

'और छोटी ?'

''छोटी मतलब रोजमर्रा की सीधी-सादी समस्याएं जैसे : शाम को कौन-सी सब्जी पकानी है, बच्चों की स्कूल-फीस कब जमा करनी है, किस रिश्तेदार की शादी में क्या गिफ्ट देना है ?''

# किस्सा

एक था राजा, एक थी रानी। रानी बीमार पड़ी और मर गई। राजा उदास हो गया। उसने मन को समझाने के लिए ताजमहल बनाया। फिर कुछ दिनों बाद वह भी मर गया। अब लोग ताजमहल देखने जाते हैं और दोनों को याद करते हैं।

# मेरी नन्ही-सी ख्वाहिश

मैं विलंब से स्टेशन पहुँचूं तो गाड़ी रूकी मिले। हम जिस गाड़ी का इंतजार कर रहे हों, उसका एनाउंसमेंट बार-बार हो। वह आकर तब तक रुकी रहे, जब तक मैं और मेरा सामान पूरी तरह से ठीक-ठाक चढ़ न जाए और मुझे अपनी पसंद की बर्थ (लोअर/अंदर) मिल जाए। गाड़ी जल्दी उस स्टेशन के मेन प्लेटफार्म पर पहुंचे जहाँ मुझे उतरना है और वहां तब तक खड़ी रहे (सीढियों के सामने) जब तक मैं पूरी तरह से ठीक-ठाक उतर न जाऊँ। गाड़ी समय से ही पहुँचे और तभी मेरी आँख खुले ताकि रात की नींद में खलल न पड़े। कोई स्टेशन पर मुझे लेने के लिए गुलदस्ता हाथ में लिए खड़ा हो। बाकी मुझे कोई मतलब नहीं किसी से। मैं सेल्फिश थोड़े ही हूँ। आखिर मुसाफिर हूँ, मुझे रहना थोड़े ही है गाड़ी में।

❑❑❑